THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-04 | January-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/

महाकवि बाणभट्ट एवं महाकवि दण्डी के गद्यकाव्यों में ललित कलाएँ : सामाजिक यथार्थ और अभिव्यक्ति का अध्ययन

डॉ.शालिनी सिंह[1], सरोजिनी बघेल[2]
[1]शोध निर्देशक , संस्कृत विभाग, भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छत्तीसगढ़)
[2]शोधार्थिनी, संस्कृत विभाग, भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छत्तीसगढ़)

सारांश

संस्कृतवाङ्मय की विशाल परम्परा में गद्यकाव्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। गद्यकाव्य केवल कथा-विन्यास, मनोरञ्जन अथवा शब्दवैभव का माध्यम नहीं है, अपितु वह तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक चेतना, सौन्दर्यदृष्टि, जीवन-पद्धति तथा कलात्मक अभिरुचियों का सजीव प्रतिबिम्ब भी प्रस्तुत करता है। महाकवि बाणभट्ट एवं महाकवि दण्डी संस्कृत गद्यकाव्य-परम्परा के दो प्रमुख स्तम्भ हैं। बाणभट्ट की हर्षचरितम् तथा कादम्बरी और दण्डी का दशकुमारचरितम् इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं।बाणभट्ट के साहित्य में सङ्गीतम्, नृत्यम्, वाद्यम्, चित्रकला, वास्तुकला, शिल्पम्, आभरणम् तथा प्रसाधनम् आदि ललित कलाओं का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष चित्रण प्राप्त होता है। उनकी वर्णन-शैली में दृश्य को शब्दों के माध्यम से मूर्त बनाने की अद्भुत क्षमता है। कादम्बरी में प्रकृति, राजप्रासाद, उद्यान, स्त्री-सौन्दर्य तथा सांस्कृतिक परिवेश का वर्णन करते हुए कवि सौन्दर्य को बहुआयामी रूप प्रदान करता है। हर्षचरितम् में राजकीय जीवन, आश्रम, ग्राम, नगर, सैन्य-व्यवस्था तथा सामाजिक संस्थाओं के साथ कलात्मक जीवन के विविध पक्षों का संकेत मिलता है।दण्डी का दशकुमारचरितम् सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से अधिक गतिशील एवं बहुस्तरीय है। इसमें राजकुमारों के साथ व्यापारी, सैनिक, तपस्वी, गणिका, कलाकार, धूर्त तथा सामान्य जन भी कथा के पात्र बनते हैं। फलतः कला यहाँ केवल राजकीय वैभव का अंग न रहकर सामाजिक व्यवहार, मनोरञ्जन, प्रेम, अर्थोपार्जन तथा नगर-संस्कृति से जुड़ जाती है।

मुख्य शब्द- *बाणभट्ट, दण्डी, गद्यकाव्यम्, कादम्बरी, हर्षचरितम्, दशकुमारचरितम्, ललितकलाः, सङ्गीतम्, नृत्यम्, सामाजिकयथार्थम्।*

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य-दृष्टि में साहित्यं समाजस्य दर्पणम्-यह धारणा अत्यन्त प्राचीन है। साहित्यकार अपने युग के सामाजिक जीवन से पृथक रहकर साहित्य की रचना नहीं करता। उसके अनुभव, संस्कार, सामाजिक परिवेश, धार्मिक विश्वास, राजनीतिक परिस्थितियाँ तथा सौन्दर्यबोध उसकी रचना में किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त होते हैं। संस्कृत साहित्य की परम्परा में यह विशेषता अत्यन्त स्पष्ट दिखाई देती है।संस्कृतवाङ्मय में काव्य का प्रयोजन केवल मनोरञ्जन नहीं माना गया। आचार्य मम्मट ने कहा है-

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।"

अर्थात् काव्य यश, अर्थ, व्यवहार-ज्ञान, अमंगल-निवारण, तत्काल आनन्द तथा प्रियजन के समान मधुर उपदेश प्रदान करने वाला होता है। इस व्यापक काव्य-दृष्टि में सामाजिक अनुभव और सांस्कृतिक जीवन का समावेश स्वाभाविक है।संस्कृत गद्यकाव्य का विकास भी इसी व्यापक साहित्यिक चेतना के भीतर हुआ। प्रारम्भिक गद्य की अपेक्षा काव्यात्मक गद्य में वर्णनवैचित्र्यम्, अलङ्कारवैभवम्, भावसमृद्धिः तथा चित्रात्मकता अधिक विकसित हुई। संस्कृत गद्यकाव्य की प्रमुख कृतियों में सुबन्धु की वासवदत्ता, बाणभट्ट की कादम्बरी एवं हर्षचरितम् तथा दण्डी का दशकुमारचरितम् विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। दण्डी की दशकुमारचरितम् साहित्यिक एवं काव्यात्मक गद्य की विशिष्ट कृति मानी जाती है।महाकवि बाणभट्ट संस्कृत के अत्यन्त प्रतिभाशाली गद्यकार हैं। उनकी हर्षचरितम् को उन्होंने स्वयं आख्यायिका के रूप में प्रस्तुत किया तथा कादम्बरी संस्कृत गद्यकाव्य की अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। बाणभट्ट का सम्बन्ध सम्राट हर्षवर्धन के समय से माना जाता है, हर्ष का शासनकाल सामान्यतः 606 से 648 ई० माना जाता है।

बाणभट्ट की साहित्यिक प्रतिभा का सर्वाधिक प्रभावशाली पक्ष उनकी वर्णनशक्ति है। वे किसी वस्तु को केवल उसका नाम लेकर नहीं छोड़ते, बल्कि उसके रूप, गन्ध, ध्वनि, गति, रंग और प्रभाव को अनेक उपमानों के माध्यम से पाठक के सामने उपस्थित करते हैं। इसीलिए उनके गद्य में चित्रकला की दृश्यात्मकता तथा संगीत की लयात्मकता दोनों का अनुभव होता है।

कादम्बरी के प्रारम्भ में ही प्रकृति और ब्रह्माण्ड की कल्पना अत्यन्त कलात्मक रूप में दिखाई देती है-

"रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये

स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।

अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे

त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥"

यह मंगलाचरण केवल धार्मिक भावना का उद्घाटन नहीं करता, बाणभट्ट की दार्शनिक एवं काव्यात्मक दृष्टि का भी परिचय देता है। कादम्बरी का उपलब्ध संस्कृत पाठ इस पद्य से आरम्भ होता है।बाणभट्ट के साहित्य में प्रकृति स्वयं एक कलात्मक सत्ता बन जाती है। वन, सरोवर, पर्वत, उद्यान, पुष्प, पक्षी, चन्द्रमा, सूर्य और ऋतुएँ केवल प्राकृतिक वस्तुएँ नहीं रह जातीं, वे पात्रों की मनःस्थितियों के साथ संवाद करती हुई प्रतीत होती हैं। इस प्रकार प्रकृति-वर्णन भी ललित-कला के व्यापक क्षेत्र में सम्मिलित हो जाता है।दूसरी ओर दण्डी की साहित्यिक दृष्टि अधिक सामाजिक एवं व्यवहारपरक दिखाई देती है। दशकुमारचरितम् में जीवन की विविध परिस्थितियाँ कथा का आधार बनती हैं। इसमें राजकीय वैभव के साथ-साथ नगरों, व्यापारियों, गणिकाओं, सैनिकों, तपस्वियों और अन्य सामाजिक वर्गों का चित्रण मिलता है। इसीलिए दण्डी की रचना में सामाजिक यथार्थ का क्षेत्र व्यापक है। दण्डी की शैली बाणभट्ट की अलङ्कारप्रधान शैली से भिन्न होते हुए भी काव्यात्मक और कलात्मक है।ललित कलाओं के अध्ययन की दृष्टि से दोनों कवियों की रचनाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। भारतीय परम्परा में सङ्गीतम्, नृत्यम्, नाट्यम्, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, शिल्पम् तथा अलङ्कारकला सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग थीं। राजदरबार में गायक और वादक होते थे, नृत्यांगनाएँ मनोरञ्जन प्रदान करती थीं, राजप्रासादों में चित्र एवं रत्नमय भित्तियों का उल्लेख मिलता है तथा उद्यानों को कलात्मक ढंग से सजाया जाता था।कादम्बरी में इसका एक सुन्दर उदाहरण मिलता है। उपलब्ध पाठ में "वीणावाहकः केयूरकः" जैसे प्रयोग से वीणा-वादन तथा संगीत-संस्कृति का संकेत प्राप्त होता है। इसी प्रकार अन्य स्थलों पर रत्नभित्ति, मणिस्तम्भ, आभरण, कुङ्कुम, चामीकर आदि पदों का प्रयोग दृश्य-सौन्दर्य और स्थापत्य-अलंकरण की समृद्ध परम्परा को व्यक्त करता है।यहाँ यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि क्या ये कलाएँ केवल सौन्दर्य-प्रदर्शन के लिए प्रयुक्त हुई हैं? प्रस्तुत शोध का उत्तर है नहीं। इनका सम्बन्ध सामाजिक जीवन से भी है। उदाहरणतः किसी पात्र का वीणा-वादन उसके सांस्कृतिक संस्कार का परिचायक है, किसी राजप्रासाद का रत्नमय होना राजकीय वैभव का प्रतीक है, नारी के आभूषण उसके सामाजिक स्तर और सौन्दर्यबोध को व्यक्त करते हैं, नृत्य और संगीत सामूहिक मनोरञ्जन की संस्कृति को उद्घाटित करते हैं।

दण्डी के यहाँ कला का सम्बन्ध अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवहार से भी जुड़ता है। दशकुमारचरितम् में विभिन्न प्रकार के पात्रों के कारण कला जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के साथ सम्बद्ध दिखाई देती है। उपलब्ध साहित्यिक विवेचन में भी दण्डी की रचना में विविध सामाजिक पात्रों, मनोरञ्जन, हास्य एवं व्यंग्य की उपस्थिति को रेखांकित किया गया है।इस शोध में अतः ललित कलाओं को केवल कला-इतिहास की दृष्टि से नहीं, सामाजिक इतिहास, सांस्कृतिक अध्ययन तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति की दृष्टि से देखा गया है। बाणभट्ट और दण्डी के यहाँ कला किस प्रकार पात्रों के जीवन, वर्गीय स्थिति, मानसिकता तथा सांस्कृतिक परिवेश को व्यक्त करती है यह इस अध्ययन का प्रमुख प्रश्न है।

बाणभट्ट एवं दण्डी का साहित्यिक परिचय

महाकवि बाणभट्ट

महाकवि बाणभट्ट संस्कृत गद्य साहित्य के अत्यन्त प्रसिद्ध आचार्य हैं। उनका काल सामान्यतः सातवीं शताब्दी माना जाता है। उनका सम्बन्ध सम्राट हर्षवर्धन के दरबार से था। उनकी दो प्रमुख कृतियाँ हैं हर्षचरितम् और कादम्बरी।हर्षचरितम् में वर्धनवंश, हर्षवर्धन तथा तत्कालीन राजकीय परिस्थितियों का वर्णन मिलता है। परन्तु इसकी विषयवस्तु केवल राजचरित तक सीमित नहीं है। इसमें ग्रामजीवनम्, नगरजीवनम्, आश्रमजीवनम्, राजसभा, सैन्यजीवनम्, धार्मिकसंस्थाः, व्यवसायाः आदि का भी उल्लेख मिलता है। इस कारण यह रचना सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।बाणभट्ट की शैली की विशेषता दीर्घसमासः, अलङ्कारवैचित्र्यम्, उपमाप्रचुरता, वर्णनकौशलम् तथा भावसमृद्धिः है। वे वस्तु को स्थिर चित्र के रूप में नहीं, बल्कि गतिशील दृश्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि उनके गद्य में चित्रकला और संगीत दोनों का प्रभाव अनुभव किया जा सकता है।कादम्बरी में कथा का विस्तार प्रेम, मित्रता, विरह, पुनर्जन्म और मानवीय भावनाओं के आधार पर हुआ है। इसका पूर्वार्ध बाणभट्ट द्वारा तथा उत्तरार्ध उनके पुत्र भूषणभट्ट द्वारा पूर्ण किए जाने की परम्परा है। उपलब्ध संस्करण में पूर्वार्ध के ७०९ पृष्ठ हैं और इसमें कथामुख, विन्ध्याटवी, जाबालि-आश्रम, तारापीड-चरित, शुकनासोपदेश आदि प्रमुख विभाग हैं।बाणभट्ट की दृष्टि में सौन्दर्यम् जीवनस्य अभिन्नम् अङ्गम् है। वे प्रकृति, मानव और कला को परस्पर सम्बद्ध करते हैं। उदाहरणतः कादम्बरी में उद्यान-सज्जा के प्रसंग में-

"केतकीधूलिभिः ... लवलीतन्नालवालमण्डलानि ...

गन्धोदक-कनक-दीर्घिकासु ... रत्नबालुकाम्।"

जैसी पदावली प्राप्त होती है। यहाँ पुष्प, सुगन्धित जल, स्वर्णिम जलाशय तथा रत्नमय बालुका के माध्यम से राजकीय उद्यान का कलात्मक संसार निर्मित होता है।इसी प्रकार वास्तु एवं अलंकरण की दृष्टि से-

"मणिस्तम्भ-मयूरानालम्बसे"

तथा"रत्नभित्तिपतितमात्मप्रतिबिम्बम्"

जैसे प्रयोग अत्यन्त उल्लेखनीय हैं। इनमें स्थापत्य, अलंकरण और दृश्य-सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय है।अतः बाणभट्ट के साहित्य में ललित कलाएँ केवल वर्णनात्मक सामग्री नहीं, सांस्कृतिक जीवन की संवाहक हैं।

महाकवि दण्डी

महाकवि दण्डी संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध गद्यकार एवं काव्यशास्त्री हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं में दशकुमारचरितम् तथा काव्यादर्शः का उल्लेख किया जाता है। अवन्तिसुन्दरीकथा को भी परम्परा में उनसे सम्बद्ध किया गया है, यद्यपि उसके कर्तृत्व एवं स्वरूप को लेकर विद्वानों में मतभेद है।दण्डी का दशकुमारचरितम् दस कुमारों के जीवनानुभवों और यात्राओं पर आधारित गद्यकाव्य है। इसकी विशेषता है-विविधचरित्रचित्रणम्, घटनावैचित्र्यम्, सामाजिकयथार्थम् तथा व्यवहारप्रधानता।दण्डी के यहाँ राजकुमारों के अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक वर्गों के पात्र आते हैं। व्यापारी, सैनिक, तपस्वी, गणिका, धूर्त और अन्य सामान्य पात्र कथा को जीवन्त बनाते हैं। इस कारण दण्डी के यहाँ कला का सम्बन्ध सामाजिक व्यवहार से अधिक स्पष्ट रूप में

दिखाई देता है।दण्डी की भाषा बाणभट्ट की तुलना में अपेक्षाकृत सरल एवं गतिशील है। उपलब्ध साहित्यिक विवेचन में दशकुमारचरितम् को साहित्यिक एवं काव्यात्मक गद्य की ऐसी रचना बताया गया है जो सुबन्धु और बाण की अत्यधिक अलङ्कारिक शैली से भिन्न है।दण्डी का उद्देश्य केवल सौन्दर्य का निरूपण करना नहीं है। वे सामाजिक जीवन की विडम्बनाओं, संघर्षों, हास्य, व्यंग्य और मानवीय दुर्बलताओं को भी सामने लाते हैं। इसलिए उनके यहाँ ललितकला सामाजिकव्यवहारस्य साधनम् बन जाती है।

संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा और ललित कलाएँ

संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा प्राचीन संस्कृत गद्य की आधारभूमि से विकसित हुई। कथा, आख्यायिका और चरित आदि रूपों ने क्रमशः साहित्यिक गद्य को समृद्ध किया। संस्कृत गद्यकाव्य में कथानक के साथ-साथ वर्णनम्, संवादः, चरित्रचित्रणम् तथा अलङ्कारः का विशेष महत्त्व रहा।गद्यकाव्य का उद्देश्य केवल घटनाओं का क्रम प्रस्तुत करना नहीं है। उसका उद्देश्य है-

"वर्णनवैचित्र्येण भावाभिव्यक्तिः।"

अर्थात् वस्तु के विविधतापूर्ण वर्णन द्वारा भाव की अभिव्यक्ति।इसीलिए ललित कलाओं का प्रवेश गद्यकाव्य में स्वाभाविक रूप से हुआ। संगीत, नृत्य, चित्रकला और स्थापत्य के वर्णन से कथा का वातावरण निर्मित होता है। राजमहल का वर्णन करते समय वास्तुकला आती है; उत्सव के समय संगीत एवं नृत्य, नायिका के प्रसाधन में अलंकरणकला, उद्यान-वर्णन में पुष्प-सज्जा और स्थापत्य का समावेश होता है।कादम्बरी में वीणा से सम्बन्धित प्रयोग-

"वीणावाहकः केयूरकः"

संगीत-संस्कृति का स्पष्ट संकेत है। राजकीय और सौन्दर्यपरक जीवन के वर्णनों में रत्नम्, मणिः, चामीकरम्, कुङ्कुमम्, आभरणम्, चित्रम्, मणिस्तम्भः, रत्नभित्तिः आदि शब्द आते हैं। इनसे उस युग के उच्चवर्गीय जीवन में अलंकरण और सौन्दर्य की महत्ता स्पष्ट होती है।भारतीय कलादृष्टि में कला का उद्देश्य केवल बाह्य सौन्दर्य नहीं, बल्कि रसोत्पत्तिः भी है। संगीत मन को आनन्दित करता है, नृत्य शरीर और भाव की गति को व्यक्त करता है, चित्रकला दृश्य को स्थायित्व देती है तथा वास्तुकला मानव-जीवन के लिए सौन्दर्यपूर्ण परिवेश निर्मित करती है।संस्कृत गद्यकाव्य में ललित कलाएँ कथा के वातावरणनिर्माण, पात्रनिर्माण, भावाभिव्यक्ति तथा सामाजिक संकेत इन चारों स्तरों पर कार्य करती हैं।

सामाजिक यथार्थ और अभिव्यक्ति

बाणभट्ट एवं दण्डी के गद्यकाव्यों में सामाजिक यथार्थ का स्वरूप अलग-अलग होते हुए भी दोनों की रचनाओं में कला समाज के साथ गहराई से सम्बद्ध दिखाई देती है।बाणभट्ट के हर्षचरितम् में राजकीय जीवन के साथ सामाजिक संस्थाओं और विविध वर्गों की उपस्थिति मिलती है। यहाँ राजा, राजपुरुष, सैनिक, तपस्वी, ग्रामवासी, व्यापारी, स्त्रियाँ तथा धार्मिक व्यक्ति आदि समाज की बहुस्तरीय संरचना को व्यक्त करते हैं। कला इन वर्गों की सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक स्तर का संकेत देती है।राजदरबार में कला का अर्थ केवल मनोरञ्जन नहीं, अपितु राजकीय प्रतिष्ठा भी है। राजसभा की शोभा, महलों की सज्जा, वस्त्राभूषण तथा संगीत-नृत्य सामूहिक रूप से राजकीय वैभव का निर्माण करते हैं।कादम्बरी में यह सौन्दर्य अधिक विकसित रूप में दिखाई देता है। उदाहरणतः रत्नमय भित्तियों और मणिस्तम्भों के उल्लेख से राजकीय अथवा अभिजात परिवेश की सम्पन्नता का संकेत मिलता है-

"रत्नभित्तिपतितमात्मप्रतिबिम्बम्..."

यहाँ भित्ति केवल वास्तु का अंग नहीं है, वह दृश्य-सौन्दर्य की वाहक है। नारी के प्रसाधन एवं आभूषणों का वर्णन केवल सौन्दर्य-चित्रण नहीं है। चामीकरम्, माणिक्यम्, कुङ्कुमम्, आभरणम् आदि पद तत्कालीन अलंकरण-संस्कृति को व्यक्त करते हैं। इससे यह भी ज्ञात होता है कि अभिजात वर्ग के जीवन में प्रसाधन एवं आभूषण सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक थे।दण्डी का सामाजिक यथार्थ इससे भिन्न है। दशकुमारचरितम् में कथा अनेक नगरों और विभिन्न सामाजिक वर्गों से होकर गुजरती है। यहाँ कला जीवन के व्यवहार से अधिक निकट है। मनोरञ्जन, नृत्य, संगीत और सौन्दर्य का सम्बन्ध

प्रेम, अर्थ और सामाजिक सम्बन्धों से जुड़ जाता है।दण्डी की विशेषता यह है कि वे केवल उच्चवर्गीय जीवन का चित्रण नहीं करते। उनकी कथा में ऐसे पात्र भी हैं जो समाज की परिधि पर स्थित हैं। गणिका, व्यापारी, सैनिक, चोर, तपस्वी और सामान्य व्यक्ति कथा के अंग हैं। इससे सामाजिक जीवन की विविधता उद्घाटित होती है।

दण्डी के यहाँ कला को जीवनोपयोगी कौशल के रूप में भी देखा जा सकता है। संगीत या अभिनय केवल राजदरबार की वस्तु नहीं, वह सामाजिक सम्पर्क, मनोरञ्जन तथा कभी-कभी अर्थोपार्जन का साधन भी हो सकता है। यह दृष्टि दण्डी के सामाजिक यथार्थ को अधिक व्यावहारिक बनाती है।स्त्री-जीवन के संदर्भ में भी दोनों कवियों की रचनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। कादम्बरी की स्त्रियाँ सौन्दर्य के साथ-साथ भावनात्मक गहराई और सांस्कृतिक चेतना से युक्त हैं। उनके प्रसाधन, आभूषण, वार्तालाप और कलात्मक परिवेश से तत्कालीन स्त्री-संस्कृति के संकेत मिलते हैं।दण्डी के यहाँ स्त्री-पात्रों का सामाजिक व्यवहार अधिक विविध दिखाई देता है। विशेषतः गणिका जैसे पात्रों के माध्यम से नगर-संस्कृति, मनोरञ्जन और अर्थव्यवस्था के पारस्परिक सम्बन्धों को समझा जा सकता है। ललित कलाएँ सामाजिक संरचना की पहचान कराती हैं। यत्र कला तत्र संस्कृतिः, यत्र संस्कृतिः तत्र समाजस्य प्रतिबिम्बम्। कला के माध्यम से समाज के मूल्य, वर्गीय अन्तर, आर्थिक स्थिति, लैंगिक भूमिकाएँ तथा सौन्दर्यबोध सामने आते हैं।बाणभट्ट की भाषा का सौन्दर्यात्मक वैभव और दण्डी की व्यवहारप्रधान गति दोनों सामाजिक यथार्थ को अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत करते हैं। बाण का गद्य पाठक के सामने चित्र निर्मित करता है, जबकि दण्डी का गद्य पात्रों और घटनाओं के माध्यम से समाज को गतिशील बनाता है।इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि बाणभट्ट के यहाँ "सौन्दर्यप्रधान सामाजिक यथार्थ" तथा दण्डी के यहाँ "व्यवहारप्रधान सामाजिक यथार्थ" अधिक प्रमुख है। दोनों में कला समाज को देखने और समझने का माध्यम बनती है।

निष्कर्ष

महाकवि बाणभट्ट एवं महाकवि दण्डी के गद्यकाव्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत साहित्य में ललित कलाएँ केवल मनोरञ्जन अथवा अलङ्कार की वस्तु नहीं थीं। वे तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संरचना, आर्थिक जीवन, राजकीय वैभव तथा मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम थीं।बाणभट्ट की कादम्बरी एवं हर्षचरितम् में सङ्गीतम्, वाद्यम्, नृत्यम्, वास्तुकला, चित्रात्मकता, अलङ्कारः, प्रसाधनम् तथा उद्यान-सज्जा के विविध रूप मिलते हैं। उनकी वर्णनशक्ति वस्तुओं को दृश्यात्मक बना देती है। "वीणावाहकः केयूरकः", "रत्नभित्तिपतितमात्मप्रतिबिम्बम्","मणिस्तम्भ-
मयूर" जैसे प्रयोग उनके कलाबोध की व्यापकता को स्पष्ट करते हैं।दण्डी के दशकुमारचरितम् में कला अधिक सामाजिक और व्यवहारपरक रूप में सामने आती है। नगर, व्यापार, मनोरञ्जन, गणिका-संस्कृति, राजकीय जीवन तथा विविध सामाजिक वर्गों के माध्यम से कला का सम्बन्ध वास्तविक जीवन से स्थापित होता है। दण्डी की कथा में कला सामाजिक सम्बन्धों और जीवन-व्यवहार का अंग बन जाती है। इन गद्यकाव्यों में ललित कलाओं का अध्ययन केवल साहित्यिक सौन्दर्य की खोज नहीं, तत्कालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना को समझने का भी महत्त्वपूर्ण साधन है। संस्कृत गद्यकाव्य की यह विशेषता उसे साहित्यिक कृति के साथ-साथ सांस्कृतिक इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत भी बनाती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बाणभट्ट, कादम्बरी, संस्कृत-हिन्दी टीका सहित, व्याख्याकार पं० कृष्णमोहन शास्त्री, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण विवरणानुसार, पृ. 55।

2. बाणभट्ट, हर्षचरितम्, संस्कृत पाठ एवं हिन्दी व्याख्या, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, पृ. 250।

3. दण्डी, दशकुमारचरितम्, संस्कृत पाठ एवं हिन्दी टीका, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, पृ. 150।

4. आचार्य बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा मन्दिर, वाराणसी, 1973, पृ. 242।

5. वाचस्पति गैरोला, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी,1978, पृ.740।

6. राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,2001, पृ. 345।

7. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, 2012,पृ. 430।

Cite this Article:

डॉ.शालिनी सिंह[1], सरोजिनी बघेल[2]. (2026). महाकवि बाणभट्ट एवं महाकवि दण्डी के गद्यकाव्यों में ललित कलाएँ : सामाजिक यथार्थ और अभिव्यक्ति का अध्ययन. The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.354–359, Volume-04, Issue-04, January-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ.शालिनी सिंह[1], सरोजिनी बघेल[2]

For publication of Research Paper title

महाकवि बाणभट्ट एवं महाकवि दण्डी के गद्यकाव्यों में ललित कलाएँ : सामाजिक यथार्थ और अभिव्यक्ति का अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-04, Month January, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/